कल हमारा है

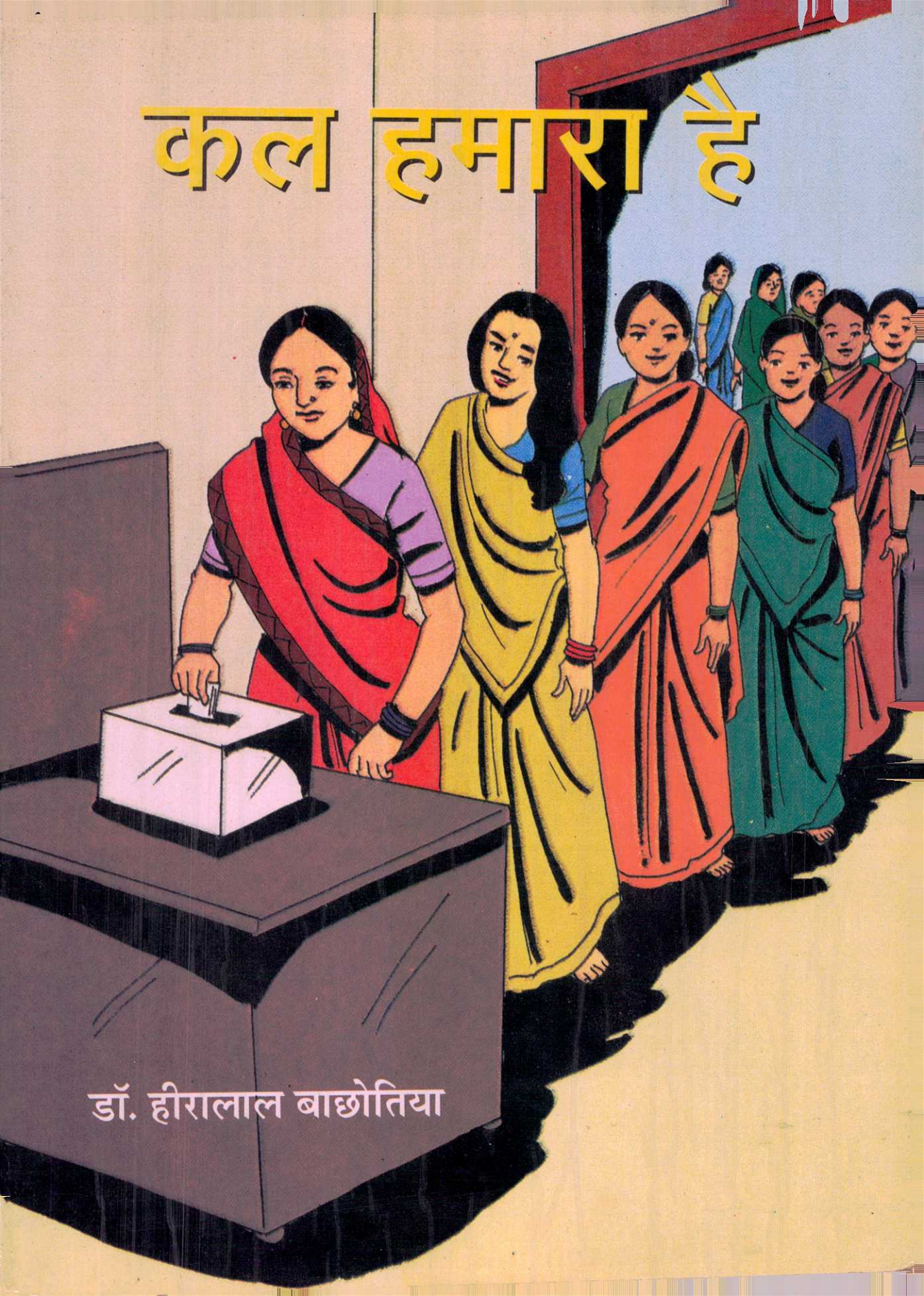

डॉ. हीरालाल बाछोतिया

कल हमारा है

डॉ. हीरालाल बाछोतिया

(Estd : 1939)
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001:2000 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन™
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110002
तत्त्वावधान • भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2008
मूल्य • पच्चीस रुपए
मुद्रक • नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली

KAL HAMARA HAI *by* Dr. Hiralal Bachhotia Rs. 25.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2 (INDIA)
ISBN 978-81-7315-614-4

कल हमारा है

तीगाँव एक छोटा गाँव है। इधर उसका बड़ा नाम हो गया। यह नाम दिलाया है तिजिया ने। तिजिया कोई रानी-महारानी नहीं—एक मामूली औरत है। वह खूबसूरत भी नहीं—बहुत साधारण है। रोज कमाती है—रोज खाती है। पढ़ी-लिखी भी नहीं है। हाँ, नाम लिखना जानती है। लेकिन उसने तीगाँव की महिलाओं को एक डोर में बाँध दिया है। तिजिया के कहने पर औरतें किसी से भी टक्कर ले सकती हैं।

तिजिया का घरवाला किसन बड़ा साहसी था। किसन की तीन-चार लोगों की टोली थी। सभी मेहनत-मजदूरी करनेवाले। कोई भी काम हो मेहनत से करते। इसलिए सब जगह उनकी पूछ थी। उस समय महंतजी का कुआँ खुदा था। किसन ने उसका ठेका जैसा ले लिया था। टोली के तीनों लोग भी साथ थे। कुएँ की मिट्टी खोद-खोदकर किनारे पर डाली

जा रही थी। धीरे-धीरे मिट्टी का ढेर बहुत ऊँचा हो गया। उधर कुएँ में झिर निकल आई। सभी खुश थे। एक-दो दिन का काम ही बाकी था।

दूसरे दिन किसन कुएँ को गहरा करने के लिए नीचे उतरा। उसने दो टोकरी मिट्टी ऊपर भेजी। तीसरी बार रस्सी से बँधी टोकरी उतारी गई। कुछ ऐसा हुआ कि टोकरी के साथ किनारे की मिट्टी भरभराकर गिरने लगी। और यह क्या! उस मिट्टी में किसन की आवाज दब गई। तीनों साथियों ने पहले तो किनारे की मिट्टी को हटाया। महंतजी को खबर दी। महंतजी ट्रेक्टर लेकर आ पहुँचे। मोटे रस्सों से बाँधकर कई लोगों को कुएँ से मिट्टी निकालने के काम पर लगाया गया। मिट्टी हटाते-हटाते आखिर उन्होंने किसन को खींच निकाला।

उधर कुएँ के पास लोग जमा हो गए थे। तिजिया, दीनू और कमली के साथ भाँय-भाँय रो रही थी। सभी उसे धीरज बँधा रहे थे। किसन को बाहर जमीन पर लिटाया गया। उसने आँखें खोलीं। तिजिया को देखा। बच्चों के सिर पर हाथ फेरा और आँखें मूँद लीं। तिजिया चीख-चीखकर रोने लगी। उसे

देखकर बच्चे भी रोने लगे।

महंतजी ने तिजिया से कहा—"डरो नहीं। बच्चों की देखभाल मैं करूँगा।" उन्होंने किसन के काम के पैसे तिजिया के हाथ पर रख दिए।

तिजिया के लिए दुनिया सूनी हो गई। वह बैठी रहती। एक दिन करीमा बुआ आई। करीमा बुआ सबके सुख-दुःख में शामिल होती थी। वह बेवा थी। लोगों के कपड़े सीकर गुजारा करती थी। वह देर तक तिजिया के पास बैठी रही, उसे समझाती रही। करीमा बुआ ने कहा, "जिस पर गुजरती है, वही जानता है। मैंने भी ये दिन देखे हैं। लेकिन बच्चों की खातिर जिंदा रही। बच्चों के लिए क्या नहीं किया? लोगों के यहाँ गोबर उठाया। आँगन लीपा। बच्चों को पाला। अब वे बड़े हो गए हैं। शहर गए तो शहर के हो गए। लेकिन मुझे तो गाँव में ही रहना पसंद है। कुछ-न-कुछ करती रहती हूँ। तिजिया, यह दुःख का वक्त भी नहीं रहेगा। हाँ, तू खाली न बैठ।"

तिजिया ने पूछ लिया, "लेकिन मुझे तो कोई काम नहीं आता। बस जंगल से लकड़ी बीनकर ला सकती हूँ।"

करीमा बोली, "ठीक है, यही सही। लेकिन जंगल से लकड़ी लाने पर पाबंदी लगने वाली है।"

तिजिया ने यह कह तो दिया। उसे याद आया, जंगल जाएगी तो कमली का क्या होगा? उसने कहा, "बुआ, तब मेरी कमली का क्या होगा? यह तो अभी दूध पीती है।"

करीमा बोली, "घबराओ नहीं, कोई-न-कोई रास्ता निकलेगा। चाहो तो कमली को मेरे यहाँ छोड़ देना। या मैं ही अपना काम लेकर यहाँ आ जाऊँगी। काम भी करती रहूँगी, तेरे बच्चों को भी देखती रहूँगी।"

तिजिया बोली, "बड़ा दिल है तुम्हारा, बुआ। ऐसे दुःख में कौन किस का सहारा बनता है?"

करीमा ने कहा, "चल ज्यादा न बोल। किसी की मदद करने का मौका ही कहाँ मिलता है। फिर मुझे बच्चे अच्छे लगते हैं। मेरी यह मुराद भी पूरी हो जाएगी।"

तिजिया जंगल से लकड़ी लाने लगी। जंगल से बड़ा गट्ठर लाती फिर उसके दो छोटे गट्ठर बनाकर बेचती। कभी पास के गाँव में भी बेचने चली जाती। यह बड़ा गाँव था। वहाँ बिजली भी थी। एक दिन वह बड़े गाँव की तरफ जा

रही थी। रास्ते में झोला टाँगे एक बहनजी मिल गईं। उन्होंने तिजिया को रोका। फिर पूछा, ''मैंने तुम्हें एकाध बार पहले भी देखा है। तुम अकेले ही यह सब करती हो। तुम्हारा घरवाला साथ नहीं देता?''

तिजिया ने गट्ठर एक पेड़ से टिका दिया फिर आँख में आँसू भरकर कहा, ''बहनजी घरवाला होता तो मैं यहाँ क्या यह सब अकेले करती?''

बहनजी बोली, ''मेरा नाम शीला है। मैं दु:खी बहनों की मदद करना चाहती हूँ। उन्हें अपने पैरों पर खड़ा देखना चाहती हूँ।''

तिजिया बोली, ''तब आज मैं आपको गाँव ही ले चलती हूँ। आप मेरे यहाँ चलो।''

शीला बहन तिजिया के साथ उसके घर पहुँची। वहाँ करीमा बुआ भी मौजूद थीं। वह दीनू-कमली को अपने हाथ से रोटी खिला रही थीं। तिजिया के साथ बहनजी को देखकर करीमा ने आँगन में चारपाई डाल दी।

तिजिया ने कहा, ''बहनजी, यह करीमा बुआ हैं। यहीं गाँव में रहती हैं। मेरे लिए तो भगवान् हैं।''

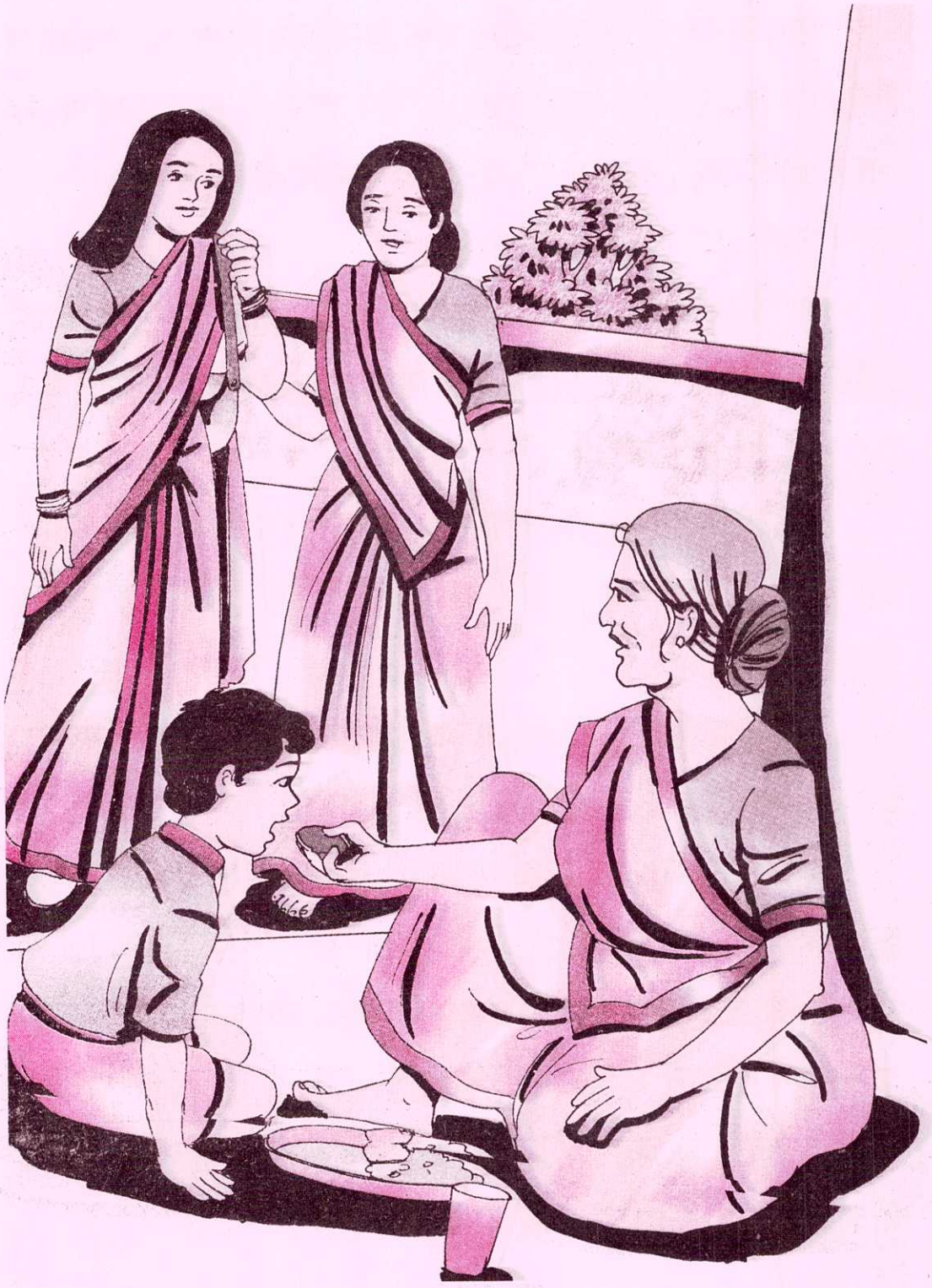

शीला बहन बोलीं, ''बुआ, आपसे भी अच्छी मुलाकात हो गई। मैं एक-दो बार इस गाँव में आ चुकी हूँ। मैं गाँव की महिलाओं का एक संगठन बनाना चाहती हूँ।''

करीमा बोली, ''यह क्या होता है?''

शीला बहन बोलीं, ''संगठन का मतलब है सबका किसी काम के लिए इकट्ठा होना।''

तिजिया ने पूछा, ''कौन से काम के लिए बहनजी?''

शीला बहन ने कहा, ''अच्छा सवाल किया तुमने। पहले पानी पिलाओ। फिर और बातें होंगी।''

तिजिया ने बहनजी को लोटे में पानी दिया। बहनजी ने ओक से पानी पी लिया। बचा पानी करीमा ने पिया। तिजिया खुश थी, किसी ने उसके घर पानी तो पिया।

शीला बहन बोलीं, ''हम 10-12 औरतों को इकट्ठा कर तीगाँव स्वयं सहायता समूह बनाएँगे।''

करीमा बोली, ''10-12 औरतें! तब तो बन चुका आपका समूह।''

शीला बोलीं, ''क्यों? क्या 10 औरतों को भी इकट्ठा नहीं कर सकतीं?''

करीमा ने कहा, ''बहनजी, आप तो शहर में रहती हैं। गाँव के बारे में ज्यादा नहीं जानतीं। काम के लिए भले औरतें इकट्ठा हो जाएँ लेकिन मीटिंग के लिए कोई औरत नहीं आएगी।''

शीला बहन बोलीं, ''तो चलो, मैं कल ही हेल्थ सेंटर के डॉक्टर साहब को लेकर आऊँगी। आप सब महिलाओं तक डॉक्टर साहब के आने की खबर पहुँचा दीजिए।''

करीमा ने कहा, ''हाँ यह ठीक है। बच्चों को दिखाने के बहाने औरतें जमा हो जाएँगी। लेकिन शीला बहन, वे जमा कहाँ होंगी? यह भी बताइए।''

शीला बहन बोलीं, ''कहाँ क्या? यहीं, तिजिया के घर जमा नहीं हो सकतीं?''

करीमा ने कहा, ''हो सकती हैं लेकिन कहीं और हों तो अच्छा है। बाद में तो यहाँ भी जमा हो सकती हैं। चाहें तो मेरे घर पर भी जमा हो सकती हैं।''

शीला बहन ने कुछ देर सोचा। फिर कहा, ''चलो पहली बैठक चौपाल में करेंगे। मैं जाते हुए मुखियाजी को बता दूँगी।''

तिजिया-करीमा ने एक साथ कहा, ''ठीक है बहनजी।''

शीला बहन के जाने के बाद करीमा ने कहा, ''तिजिया, आज मास्टरजी आए थे। कह रहे थे, कल से दीनू को स्कूल भेजें। कल कहीं जाने से पहले मास्टरजी से मिल लेना।''

तिजिया बोली, ''बड़ा अभागा है दीनू। इसका बाप होता तो दीनू...''

करीमा ने बात काटते हुए कहा, ''अभागा क्यों? देखना एक दिन तेरा नाम रोशन करेगा।''

दूसरे दिन तिजिया मास्टरजी से मिलने पहुँची। उसने कहा, ''राम राम मास्टरजी, मैं दीनू को लेकर आई हूँ।''

''नमस्ते तिजिया बहन। यह आपने अच्छा किया जो बच्चे को ले आईं। गाँव पंचायत से इस फार्म पर दस्तखत करवा लाएँ। इससे बच्चे को वजीफा मिल जाएगा।''

तिजिया ने पूछा, ''इसके लिए क्या करना होगा?''

मास्टरजी ने कहा, ''पहले फार्म भरकर सरपंचजी के पास ले जाओ। वह दस्तखत कर देंगे।''

तिजिया बोली, ''लेकिन मास्टरजी, मैं पढ़ना-लिखना तो नहीं जानती। हाँ, नाम लिख लेती हूँ।''

मास्टरजी ने कहा, ''यह तो बहुत अच्छी बात है कि

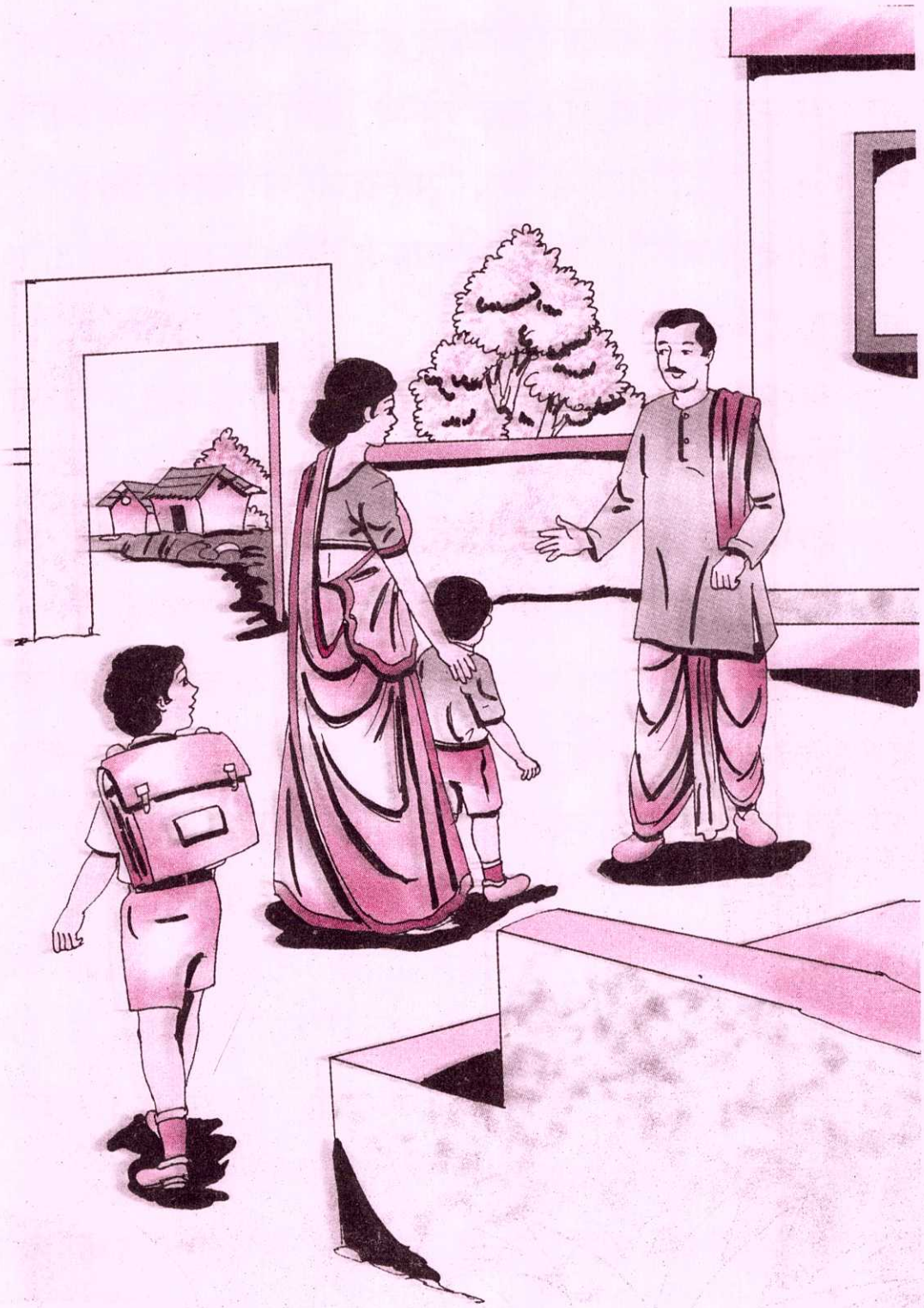

तुम्हें नाम लिखना आता है। लाओ, फार्म मैं ही भरे देता हूँ।''

तिजिया फार्म लेकर महंतजी के पास पहुँची। महंतजी ही सरपंच भी थे। तिजिया ने कहा, ''पाँव लागूँ महंतजी। दीनू का फार्म लाई हूँ। दस्तखत कर दीजिए।''

महंतजी बोले, ''हाँ-हाँ, क्यों नहीं। लाओ, कागज दे दो।''

दूसरे दिन चौपाल में औरतें इकट्ठी हुईं। उनका उत्साह देखते ही बनता था। डॉक्टर साहब ने बच्चों को देखा और दवाई भी दी। फिर सभा शुरू हुई। औरतों से तिजिया ने कहा, ''बहनो! लो शीला बहन भी आ गईं। आओ, ताली बजाकर उनकी अगवानी करें।''

तालियों के बीच शीला बहन अपनी जगह बैठ गईं और बातचीत शुरू की। रामरती ने कहा, ''बहनजी, पूरी बात सुनाई नहीं पड़ रही।''

शीला बहन खड़ी हो गईं। अब वह थोड़ा जोर से भी बोलने लगीं—''बहनो! हम सबका एक ही दुःख है। हम सुबह से शाम तक खटती हैं। घर का सारा काम करती हैं। पानी भरकर भी लाती हैं। पशुओं की देखभाल भी हम ही

करती हैं। मेहनत-मजदूरी भी करती हैं—अपना ही नहीं बल्कि दूसरों का भी पेट भरती हैं। लेकिन हमारे काम की कदर नहीं होती। इसका सीधा मतलब है हमारे काम की कीमत नहीं आँकी जाती। काम की कीमत रुपयों में आँकी जाती है। अगर हम इसका कुछ हिसाब बता सकें तो घरवालों को पता चलेगा कि हमारे काम का कितना मोल है। कोई एक औरत ऐसा नहीं कर सकती···।''

रमिया ने पूछ लिया, ''बहनजी, एक अकेली औरत क्यों नहीं कर सकती, तिजिया तो अकेले ही यह सब करती है।''

शीला बहन ने समझाते हुए कहा, ''तिजिया बहन की अलग बात है। तिजिया तो एक मर्द जितना काम करती है। हम बहनों के लिए भी रास्ता है, हम एक संगठन बनाएँ। जो भी काम हम करती हैं, उसमें से हर दिन एक-एक रुपया बचाएँ, महीने के तीस रुपए हो जाएँगे। साल के साढ़े तीन सौ से भी ज्यादा। हम ये रुपए बैंक में रखेंगे। बैंक से ब्याज मिलेगा। पैसा जमा रहेगा। जरूरत पड़ने पर किसी काम के लिए निकालेंगे।''

रामरती बोली, ''चलो, किसी तरह एक रुपया बचा लिया

पर उसे जमा किसके पास करेंगे ?''

शीला बहन बोलीं, ''यह तुमने बहुत सही सवाल किया। मैं बताती कि उससे पहले ही तुमने पूछकर अच्छा किया। अब ध्यान से सुनो। हम स्वयं सहायता समूह बनाएँगे। इसके लिए १० से २० लोग चाहिए। इनमें से एक बहन को हम अध्यक्ष चुनेंगे। अध्यक्ष ऐसा हो जिस पर सब भरोसा करें। बचत का पैसा सब अध्यक्ष के पास जमा करेंगे।''

रामरती फिर बीच में बोली, ''बहनजी, अभी तो कह रही थीं, पैसा बैंक में रखेंगे। अब कह रही हैं अध्यक्ष के पास जमा करेंगे।''

शीला बहन बोली, ''बहन, मेरी पूरी बात सुनो। उसके बाद सवाल करना। अध्यक्ष के अलावा एक कोषाध्यक्ष और एक सचिव का भी चुनाव होगा। सचिव भी भरोसे का होना चाहिए। उसका पढ़ा-लिखा होना भी जरूरी है। उसके पास हिसाब का रजिस्टर रहेगा। कोषाध्यक्ष या सचिव बैंक में खाता खोलेंगे। पैसा जमा करने और निकालने का काम भी ये करेंगे।

बुधिया ने पूछा, ''जमा पैसों का क्या होगा।''

शीला बहन ने जवाब दिया, ''बहुत ठीक सवाल है।

कोई काम पड़ने पर स्वयं सहायता समूह से बहुत कम ब्याज पर या बिना ब्याज के पैसा मिल जाएगा। साहूकार से छुटकारा मिलेगा। समूह के सदस्यों का जीवन बेहतर बनाने के लिए सब लोग मिलकर कोई काम शुरू करेंगे। जैसे यहाँ मिर्च बहुत होती है। उसे सुखाकर, पीसकर पैकेट में बंद कर शहर में बेच सकते हैं। आजकल मिर्च पाउडर में मिलावट होती है। हमारे पैकेट पर स्वयं सहायता समूह का ठप्पा लगा रहेगा। लोग इसे इत्मीनान से खरीदेंगे।''

तिजिया बोली, ''बहनजी, हम तो अचार-पापड़ भी बना सकती हैं।''

शीला बहन ने कहा, ''क्यों नहीं, लेकिन इसके लिए बड़ी रकम और जानकारी चाहिए। पैसों के लिए बैंक से लोन मिल सकता है। हम खादी कमीशन वालों से बात करेंगे ताकि सही जानकारी मिल सके।''

तिजिया फिर बोली, ''बहनजी, हमारी बचत तो बहुत छोटी होगी। इस समय बारह जन हैं, कुछ और लोगों से कहेंगे। मान लो, बीस जन हो गए तो हर दिन के बीस रुपए जमा हुए। महीने में छह सौ रुपए ही तो हुए।''

शीला बहन ने शाबाशी देते हुए कहा, ''तुम्हारा हिसाब तो बहुत सही है। हमें याद रखना होगा। जैसे बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है वैसे ही हमारी बचत एक दिन रंग लाएगी। लेकिन पहले तो हमें तीन लोगों का चुनाव करना है।''

रामरती बोली, ''बहनजी, हम आपको ही अपना अध्यक्ष बनाते हैं।'' सभी ने इसका समर्थन किया।

शीला बहन बोली, ''नहीं, अध्यक्ष अपने में से किसी को बनाना होगा।''

इस पर सब एक-दूसरे का मुँह देखने लगीं। इशारों से उनमें कुछ कानाफूसी भी हुई।

आखिर रमिया खड़ी हुई। वह बोली, ''मैं इसके लिए तिजिया का नाम सुझाती हूँ।''

तिजिया ने इशारे से मना किया। पर सभी औरतें एक साथ बोल पड़ीं, ''हाँ, तिजिया के नाम पर हम सब राजी हैं।''

शीला बहन ने कहा, ''ठीक है, तिजिया बहन अध्यक्ष चुनी गईं। आप चाहें तो सचिव का काम मैं देख सकती हूँ।''

रामरती ने कहा, ''बहनजी, आपने तो हमारे मन की

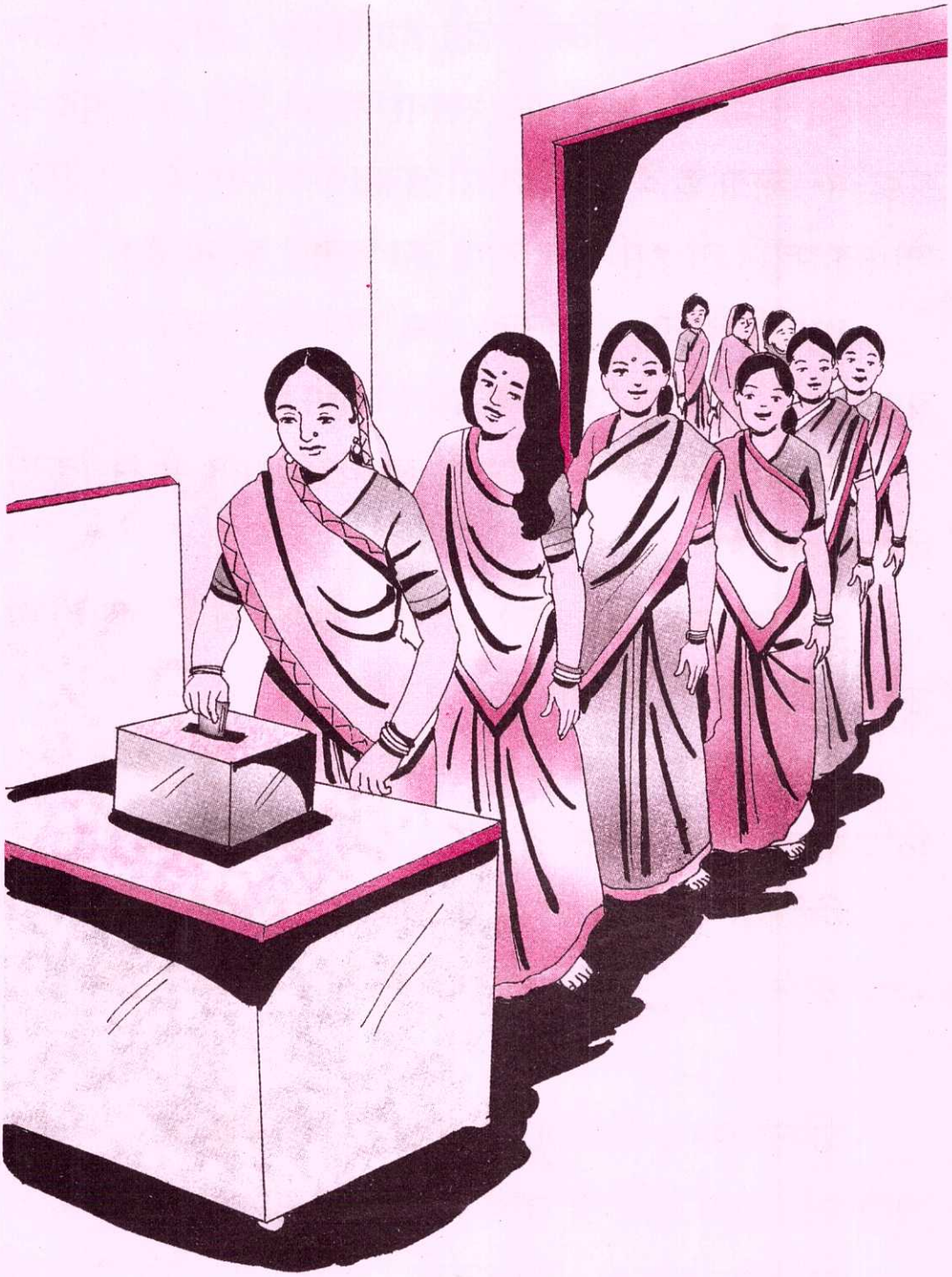

बात कह दी। आपके बिना तो हम कुछ कर नहीं सकतीं।''

शीला बहन बोलीं, ''तब मेरी एक और बात माननी पड़ेगी। और कामों के साथ मैं दो महीनों तक आप सबको पढ़ाऊँगी। सबको रोज एक घंटा इसके लिए देना होगा।''

''मंजूर है।'' सबने एक साथ जवाब दिया।

तिजिया अध्यक्ष क्या बनी, उसमें गजब का आत्मविश्वास आ गया। उसने दूसरे ही दिन पूरे महीने की बचत के तीस रुपए जमा करा दिए। बुधिया बोली, ''मैंने बिछुए लेने के लिए रुपए जोड़े थे। उन्हें बाद में लूँगी। पहले मेरे भी तीस रुपए जमा कर लो।''

रामरती, इमरती, रमिया, सभी ने बचत के रुपए जमा कर दिए। स्वयं सहायता समूह के नाम पर पाँच सौ रुपए का बैंक अकाउंट खोला गया। बचे रुपयों से सूखी मिर्च खरीदी गई।

अगली बैठक हुई। शीला बहन ने कहा, ''मिर्च पीसने का काम बहनें अपने घरों में करेंगी। जिन बहनों के यहाँ घट्टी या हाथ चक्की है वहाँ दूसरी बहनें भी पहुँच जाएँ। वे पिसे हुए मिर्च पाउडर को तौलकर पैकेट बनाएँगी। दोपहर

बाद एक घंटे के लिए सब बहनें यहाँ आएँगी, चर्चा करेंगी, पढ़ना-लिखना सीखेंगी। सबको अपना-अपना हिसाब रखना है। इसके लिए पढ़ना-लिखना भी जरूरी है। आज सरपंचजी ने बड़ी मुश्किल से हमें तीन बजे से चार बजे तक यह चौपाल दी है।''

तिजिया बोली, ''यह तो सरपंचजी की मनमानी है। यहाँ होता ही क्या है? हाँ, शाम को जरूर कुछ लोग हुक्का पीने के लिए जुड़ते हैं।''

शीला बहन बोलीं, ''कोई बात नहीं, कल हमारा होगा। बहनो! सरकार ने फैसला किया है, पंचायत में एक-तिहाई औरतें पंच बनेंगी। इतना ही नहीं, तीगाँव की अगली सरपंच कोई महिला बनेगी, यह खबर पक्की है। तिजिया बहन स्वयं सहायता समूह की प्रधान हैं। हम उन्हें सरपंच भी जरूर बनाएँगे।''

सभी औरतों ने कहा, ''बहुत हुई मर्दों की मनमानी! अब हम बता देंगे अच्छी पंचायत क्या होती है।''

□□□

आमुख

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली ने नवसाक्षरों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप साक्षरता-साहित्य के निर्माण में नवाचार की पहल की है। हिंदीभाषी क्षेत्रों के नवसाक्षरों की पहचान की रोशनी में प्रौढ़ साक्षरता में लेखनरत साहित्यकारों, समाजार्थिक-चिंतकों, प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों तथा सतत शिक्षा केंद्रों के अनुभवी आयोजकों ने 23-24 अगस्त, 2007 की अवधि में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आयोजित विचार गोष्ठी में नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य-लेखन पर गहन विचार-विमर्श किया।

साक्षरता-सामग्री के पाठ्य विवरण पर संगोष्ठी में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों में सहमति हुई। साक्षरता सामग्री के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला उद्देश्य, जो नवसाक्षरों की साक्षरता को सजीव बनाने और आगे बढ़ाने में सहायक हो; दूसरा उद्देश्य, जो जन-कल्याण और सामूहिक कार्य-संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो, ताकि सब लोग मिल-जुलकर रहते हुए विकास की ओर बढ़ें। तीसरा उद्देश्य, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हित के लिए उन्हें प्रेरणा दे सके, जिससे उनका कल्याण, समाज का हित और राष्ट्र का विकास होता रहे।

इस प्रौढ़ साक्षरता साहित्य कार्यशाला में डॉ. हीरालाल बाछोतिया द्वारा लिखित पुस्तक **'कल हमारा है'** नवसाक्षरों को जागरूक पाठक बनाने और विकास के क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। इसका संप्रेषण और भाषा स्तर भी प्रौढ़ नवसाक्षरों में जाँच लिया गया है। इस पुस्तक का विधिवत् क्षेत्र-परीक्षण करा लिया गया है। इस पुस्तक में नवसाक्षरों के सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता दी गई है। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होगी।

इसे प्रकाशित करने में और इसे नवसाक्षरों तक पहुँचाने में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ने जो सहयोग प्रदान किया है, हम उसके लिए हृदय से आभारी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रभात प्रकाशन ने इस शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण का दायित्व स्वीकार किया है। इस पुस्तक के पाठकों से हमें जो सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

—डॉ. मदन सिंह
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक